भजन

माशूक पिया अंगों की,सुन्दरता और सलूकी
छ्ब जो है मुखारबिन्द की,पिया कैसे उसको बताऊं
सुख करूं ब्यान,पिया कैसे यहाँ
मशूक मेरे तड़पे है जिया
1–मुख चौक की जो सलूकी,आशिक नैन ही,हैं ये सब जानते
गहराई पिया हरवटी की,उफ..उसपे लाल होंठ,दांतों की जो लड़ी
हो..जुबां में पान बीड़ा,माशूक जब हैं चबाते
मूंदे मूंदे होठों से,जब वाणी पिया जी सुनाते
सुख करूं...
2–बांकी नजर माशूक की,होठों में पान है,रूहों का जाम है
पिया जी की तिरछी मुस्कनियां,होठों में पान घायल रूहों की जान है
हो..पिया पूरा जब मुस्कायें,रूहें सारी गिर गिर जायें
मुतलक ही वो मर हैं जाती,माशूक की हैं ये अदायें
सुख करूं..
3–गोरे गालों की लालियां,होठों की लालियां,पान की लालियां
पान चबाते हाथ हिलाते,बातें करते पिया,रूहों के दरम्यान
हो..बड़े जोश में जब हैं वो आते,सब अंगों इश्क लुटाते
मेवा निकाल अपने मुख से,रूहों को जब वो खिलाते
4–पान ले मुख में जब चलें,हैं नजाकत भरी,चाल मेरे पिया
जामें से झलके है ईजार जो,शोभा उस चाल की,बाजे भूखन पिया
हो..पतली पतली उंगरियों से,पिया मुख में पान हैं डालें
पिया की नूरी शोभा,भूखन की शोभा बढ़ावें
फेर फेर ए मुख मैं निरखूं,वारी वारी बलिहारी जाऊं
सुख करूं..